Airo International Research Journal

Volume XII, ISSN: 2320-3714
August, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UGC Approval Number 63012

धर्मवीर भारती के गद्य–साहित्य में नारी के गुणात्मक स्वरूप की विवेचना

डा. कुलवन्त सिंह
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, एम.एम पी.जी कालेज
फतेहाबाद (हरियाणा)
Email: kulwantsingh9983@gmail.com
Mob.No9896895087

प्रस्तावनाः– धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों में अग्रणी हैं। इनके साहित्य में युगीन परिवेश के अन्तर्गत युगीन हलचल, महत्वपूर्ण घटनाएं, राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक, आर्थिक परिवर्तनों, नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीय चिंताओं का अधिकाधिक वर्णन हुआ है। गुप्त ने जीवन को उदार, परिष्कृत सम्पन्न और सृजनशील बनाने के लिए संस्कृति का दामन बड़ी लग्न के साथ थामा है। यही कारण उनके साहित्य में संस्कृति की समीपता के साथ–साथ देश–प्रेम, देशभक्ति, राष्ट्रीयता का स्वरूप दृश्टिगोचर जाता है।

धर्मवीर भारती के गद्य–साहित्य में नारी का गुणात्मक स्वरूपः– भारतीय साहित्य में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिना उसके साहित्य सृजन ही निरर्थक है। भारतीय परम्परा और हिन्दु शास्त्रों में नारी को श्री कहा गया है नर के न और र दोनों ही वर्ण हस्व है जबकि नारी के दोनों वर्ण ही दीर्ध है। इससे यही द्योतक होता है कि नारी का स्थान नर से ऊंचा है। कबीर, जायसी जैसे अमर कवियों ने नारी में ही परम प्रियतम परमात्मा के स्वरूप को देखा है। **डा. राधाकृष्णन के शब्दों में**– ''जब आकाश में काले बादल होते हैं, भविष्य का मार्ग घने वन में से होकर जाता है। जब हम अंधकार में अकेले होते हैं, प्रकाश की एक भी किरण नही दिखाई पड़ती और सब और कठिनाईयां होती हैं, तब हम अपने आपको किसी प्रेममयी नारी के हाथों में छोड़ देते हैं। ''[1]

धर्मवीर भारती के गद्य साहित्य में नारी के गुणों का वर्णन इस प्रकार हैः–

समपर्णशीलताः नारी को सदैव त्याग और समर्पण की साकार मूर्ति माना गया है। क्योंकि नारी ने हमेशा पर के लिए स्व का विसर्जन किया है। समर्पण की इसी भावना ने उसे श्रद्धा के केन्द्र में लाकर खड़ा किया है। **इसी सन्दर्भ में प्रसाद कहते हैं**– ''नारी तुम श्रद्धा हो। नारी केवल शारीरिक बनावट में, बल में पुरूष से कमतर है और कमतर भी नही कह सकते जो कि कोमलता भी उसका एक गुण है लेकिन प्रकृति ने उसकी इसी कमजोरी को अनेक गुणों से विभूषित कर उसे पुरूषों से श्रेष्ठ नही अतिश्रेष्ठ बना दिया है। उसे सुकमारता और सौन्दर्य प्रदान कर आकर्षण से भर दिया है। वृद्धि में वह किसी भी स्तर पर पुरूष से कम नही है।''[2]

धर्मवीर भारती ने अपनी **''कहानी आधार और प्रेरणा''** में शिखर और संहिता के माध्यम से गौतम बुद्ध और उनकी पत्नी सरीता की समर्पणशीलता को इस प्रकार दर्शाया है– ''प्रभात में सरीता ने देखर–पर्णकुटी के कपाट खुले थे। संभवतः शिखर गया है स्नान के लिए। वह प्रतीक्षा करती रही..... ... किन्तु.....। जाओ शिखर! तुम देखना सरिता तुम्हारे मार्ग में बाधक न बनेगी। ओस नश्वर होती है पर वह स्वयं गिरकर भी फूलों में मादक सौरभ भर जाती है। मैं मिटूंगी, शिखर, पर तुम्हारा सौरभ पल्लवों में उलझकर न रह जाएगा। जाओ, जाओ मेरे देवता।''[3]

इसी प्रकार पिरामिड की हंसी में भी भारती जी ने नारी की समर्पणशीलता का वर्णन किया है–''कलाकार। राजकुमारी चीख उठी.....मैं हार गयी युवक। मैं तुम्हारे सामने हार मानती हूं। मेरा वैभव, मेरा यौवन, मेरा रूप, मेरा राज्य, कला को तुम्हारे चरणों पर अर्पित है।''[4]

–ममतामयी नारीः– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' ये कहावत नारी के ममतामयी स्वरूप को चरितार्थ करती है। मातृत्व में ही नारी की सम्पूर्णता

झलकती है। धर्मवीर भारती का गद्य साहित्य नारी के ममतामयी स्वरूप से ओतप्रोत है। ''**नारी और निर्वाण**'' कहानी के अन्तर्गत जब सुजाता बुद्ध को खीर खिलाने आयी तो बुद्ध ने अस्वीकार कर दिया लेकिन सुजाता के आग्रह पर उसे ग्रण किया–

''आर्य यह प्रसाद ग्रहण करें; और उसने खीर का पात्र सम्मुख रख दिया। सिद्धार्थ ने सिर हिला दिया.....न। क्या मेरी पूजा व्यर्थ जाएगी। सिद्धार्थ ने देखा–सुजाता ने नयनों में था शहद–सा वात्सल्य और चांदनी सा स्नेह। ग्रहण करो न बन्धु। सुजाता ने कहा और वट में सूत बांधने लगीं। बन्धु सिद्धार्थ ने कहा–नारी के प्रणयपाश को तोड़ा जा सकता है पर स्नेह की इस अक्षय वात्सल्यधारा में मनुष्य को तिनके के समान वह जाना पड़ता है। खीर पान कर सिद्धार्थ ने गहरी सांस ली।''[5]

'नारी और निर्वाण' कहानी में मातृ शक्ति के सम्मुख झुककर बुद्ध का कहना– ''मातृत्व की साधना ने नारी का निर्वाण से भी ऊंचा स्थान बना दिया है।''[6]

सृष्टि सृजन में नारी की भूमिका पर **''सूरज का सातवां घोड़ा''** उपन्यास में मणिक मुल्ला का यह कथन– ''नारी पहले मां होती है तब कुछ और। इसका जन्म ही इसीलिए होता है कि वह मां बने और सृष्टि का क्रम आगे बढावे, यही उसकी महानता है।''[7]

–प्रतिव्रता नारीः एक पतिव्रता नारी में चिन्तनशीलता, दूरदर्शिता, स्वाभाविकता, सहनशीलता, दयाशीलता, सहिष्णुता, संवेदनशीलता के गुण संस्कार रूप में विद्यमान रहते हैं। धर्मवीर भारती के **'नंदी प्यासी थी'** एंकांकी–संग्रह के अन्तर्गत ''**संगमरमर की एक रात**'' 'शीर्षक एंकाकी' में एक नारी पात्र मेहर का पतिव्रता स्वरूप इस प्रकार है– ''तुमने मुझसे यह सवाल कभी नही पूछा वरना तब भी तुमसे झूठ नही बोलती। एक उम्र थी जब मैं सलीम के पीछे पागल थी, जैसे एक उम्र में हर लड़की होती है। शादी हुई आप मिले, सब कुछ भूल गई जैसे सभी औरतें भूल जाती हैं।''[8]

कवि सूर्य लखमीचन्द कृष्णचन्द शर्मा पतिव्रता नारी की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए लिखते हैं–''पवित्र स्त्री तन भी है, रूप भी, सहरा भी और आनन्द स्त्रोत भी, घर का प्रकाश भी और स्वर्ग का साधन भी, दारिद्रय में धन राशि भी और धनाधिक्य में सबल जीवन का सबंल भी।''[9]

–कर्तव्यनिष्ठताः कर्तव्यनिष्ठता या कर्तव्य परायणता नारी का सर्वोतम गुण है। जिससे समर्पित भावना से अपने कर्तव्य का निवाह करते हुए सब कुछ त्यागने पर उतारू हो जाती है। धर्मवीर भारती की कहानी **'स्वर्ग और पृथ्वी'** में भव्य ने देवदासी के बारे में विचार व्यक्त इस प्रकार किए–. ''ठहरो भव्य। वह बात काट कर बोली–वास वदता ने प्रेम किया था और बुद्ध। बुद्ध ने उसके प्यार का तिरस्कार कर मानवता की भावनाओं का अपमान किया था और अंत समय में प्रेम के शव पर करूणा और दया का कफन उठाकर जले पर नमक छिड़का। भव्य चकित रह गया। जिस मृत्यु से वे जीवन भर डरते रहे। यह देवदासी उसे किस निर्भयता से स्वीकार कर रही है।''[10]

इसी कड़ी में **आधार और प्ररेणा** में नारी पात्र सरिता के माध्यम से कर्तव्य परायणता का चित्रण मिलता है– ''जाओ देवता। तुम कभी नही समझोगे सरिता ने तुम्हे क्यों लौटा दिया। क्षण भर के उल्लास के लिए सरिता तुम्हारी साधना को तोड़ना नही चाहती। .....तुम जाओ, मेरी स्मृति के कांटे चूम–चूमकर तुम्हारा मार्ग प्रशस्त करेंगे।''[11]

–सेवा भावनाः नारी समाज की ही नही अपितु परिवार की भी धूरी है। वह एक नही अपितु तीन–तीन परिवारों की भूमिका निभाती है, बनाती है, संवारती है। तीनों ही रूपों में नारी सेवावृत रहती है। भारती जी के उपन्यास **गुनाहों के देवता** में नारी सेवाभाव स्वरूप का वर्णन मिलता है। सुधा जब शादी के बाद मायके आई तब चन्दर उससे ठीक से बात नही करता, दोनों की नाराजगी का विनती पूरा ध्यान रखती है–''लिजिए खाना खा लीजिए। विनती बोली। मैं नही खाऊंगा चन्दर बोला। खाइए वरना अच्छी बात नही होगी। आप दोनों मिलकर मुझे मार डालिए, बस किस्सा खत्म हो जाएगा। न आप सीधे मुंह बात करते हैं न दीदी। पता नही आप लोगों को क्या हो गया है।''[12]

–उपसहांरः– उपसहांर स्वरूप हम कह सकते हैं कि धर्मवीर भारती के गद्य साहित्य में नारी चेतना

के अन्तर्गत नारी के गुणों की विस्तृत विवेचना मिलती है। उनके गद्य साहित्य में नारी माता के रूप में, पत्नी के रूप में, बेटी के रूप में, प्रेमिका के रूप में दासी के रूप में सेविका के रूप में दिखाई पड़ती है। सहनशीलता, दया, त्याग, सहानुभूति, ममता, वात्सल्य, करूणामयी, स्नेह धैयशील, कर्तव्यनिष्ठता आदि जैसे गुणों से सम्पन्न नारी धर्मवीर भारती के गद्य लेखन का केन्द्र बिन्दु रही है। नारी केवल परिवार व समाज का ही अभिन्न अंग नही है अपतु सृष्टि का सर्वोतम अंग है। नारी के आंचल में ही सृष्टि पल्लवित, फलित व फूलित होती है। निसन्देह धर्मवीर भारती जी ने अपने गद्य साहित्य में नारी को स्थान देकर न केवल नारी जाति को गौरविन्त किया है। बल्कि हिन्दी साहित्य में नारी विषयक लेखन परम्परा को आगे बढ़ाया है।

सन्दर्भ–सूची

1. डा. राधाकृष्णन, धर्म और समाज, पृ. 163
2. डा. सुधा जैन, आधुनिक नारी–दशा और दिशाएं, पृ. 82
3. डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर–धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड–2, पृ. 86
4. डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर–धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड–1, पृ. 112
5. डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर–धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड–2, पृ. 134
6. डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर–धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड–2, पृ. 27
7. डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर–धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड–1, पृ. 289
8. डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर–धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड–2, पृ. 319
9. कविसूर्य लख्मीचंद कृष्णचंद शर्मा, नारी और नारीवाद, पृ. 179
10. डा. चंद्रकांत नारी और नारीवाद, खण्ड–2, पृ. 85
11. डा. चंद्रकांत नारी और नारीवाद, खण्ड–2, पृ. 88
12. डा. चंद्रकांत नारी और नारीवाद, खण्ड–1, पृ. 169